eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 05, May 2025

उच्च माध्यमिक स्तर के कला एवं विज्ञान वर्ग के छात्र–छात्राओं के आत्म–सम्प्रत्यय का तुलनात्मक अध्ययन

बीरेन्द्र कुमार[1], प्रोफेसर मधुरिमा सिंह[2]
[1]शोधार्थी (शिक्षाशास्त्र)
[2]डी0जी0पी0जी0 कालेज सी0एस0जे0एम0 यूनीवर्सिटी, कानपुर नगर

Received: 15 May 2025 Accepted & Reviewed: 25 May 2025, Published: 31 May 2025

Abstract

मनुष्य ही समाज का निर्माणकर्ता एवं संरक्षक होता है। शिक्षा ही वह माध्यम है जिसके द्वारा मनुष्य का सर्वांगीण विकास होता है। उच्च माध्यमिक स्तर पर शिक्षा अत्यधिक महत्वपूर्ण हो जाती है तथा इस स्तर पर छात्र–छात्राओं का आत्म सम्प्रत्यय अत्यधिक महत्वपूर्ण होता है। प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य उच्च माध्यमिक स्तर के कला एवं विज्ञान वर्ग के छात्र–छात्राओं के आत्म सम्प्रत्यय का तुलनात्मक अध्ययन करना है। प्रस्तुत शोध हेतु न्यादर्श के रूप में 200 छात्र–छात्राओं का चयन किया गया है। आकंड़ो के संकलन के लिये डॉ0 आर0के0 सारस्वत द्वारा निर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है। प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन, टी–अनुपात प्रविधियों का प्रयोग किया गया है। शोध के विश्लेषण के पश्चात् निष्कर्ष हेतु पाया गया है कि कला एवं विज्ञान वर्ग के छात्र–छात्राओं के आत्म सम्प्रत्यय में सार्थक अन्तर है।

कूट शब्द – उच्च माध्यमिक स्तर, कला एवं विज्ञान वर्ग के छात्र–छात्रायें, आत्म सम्प्रत्यय।

Introduction

शिक्षा ही वह माध्यम है जिसके द्वारा मनुष्य के सर्वांगीण विकास के साथ–साथ उसमें आत्मनिर्भरता भी आती है। शिक्षा का समाज से अटूट सम्बन्ध है जिसके कारण कभी समाज शिक्षा को और कभी शिक्षा समाज को प्रभावित करती है। समाज के अनुसार ही शिक्षा की व्यवस्था की जाती है। हमारे यहॉ शिक्षा कई चरणों में प्रदान की जाती है इनमें उच्च माध्यमिक शिक्षा अति महत्वपूर्ण है। उच्च माध्यमिक शिक्षा वह शिक्षा है जो माध्यमिक शिक्षा के बाद व विश्वविद्यालयी शिक्षा से पूर्व प्रदान की जाती है। इस शिक्षा को ग्रहण करने वाले छात्र–छात्रायें सामान्यता किशोरावस्था के होते है। किशारोवस्था में शिक्षा की आवश्यकता को इस प्रकार भी समझा जा सकता है कि इस अवस्था में बालक बालिकाओं को सही या गलत का बोध नहीं होता है। वह सिर्फ अपनी आवश्यकताओं को किसी भी कीमत पर पूरी करना चाहते हैं तो शिक्षा ही उन्हे सही मार्ग दिखाती है। किशारोवस्था में छात्र–छात्राओं में कई सारे शारीरिक तथा मानसिक परिवर्तन होते है जिसके कारण वह आत्म सन्तुलन नहीं कर पाते हैं। अतः किशारोवस्था में शारीरिक तथा मानसिक सन्तुलन बनाने के लिये शिक्षा अति महत्वपूर्ण हो जाती है।

किशारोवस्था में छात्र–छात्राओं की शिक्षा में आत्म–सम्प्रत्यय एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। आत्म–सम्प्रत्यय किसी भी व्यक्ति का आत्म–बोध है जो उस व्यक्ति को शिक्षा के माध्यम से सकारात्मक दिशा प्रदान करता है। आत्म–सम्प्रत्यय एक ऐसा शब्द है जिसका प्रयोग शिक्षा में बहुतायत में किया जाता है। इसे सामान्य रूप से व्यक्ति से सम्बन्धित अभिवृत्तियों, भावनाओं और विचारों से समझा जा सकता है। एक व्यक्ति अपने आप को जिस तरह से देखता है अथवा अपना प्रत्यक्षीकरण करता है उसे ही

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 05, May 2025

आत्म–सम्प्रत्यय कहा जाता है। **वुडवर्थ के अनुसार– "आत्म–सम्प्रत्यय व्यक्ति का निजी विचार है, जो उसके स्वयं के जीवन में घटित होने वाली घटनाओं, वस्तुओं एवं भावनाओं पर आधारित है।"**

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन –

1– तमन्ना, अनवर व डॉ0 जेबा (2023) ने सामाजिक–आर्थिक स्तर, स्कूल व लिंग के संदर्भ में किशोरों के आत्म–सम्प्रत्यय एवं अवधारणा प्राप्ति का अध्ययन किया। निष्कर्ष में पाया कि अवधारणा प्राप्ति एवं आत्म सम्प्रत्यय जैसी अनेक व्यक्तिगत विशेषताओं के विकास एवं पुर्न संगठन के उसके लिंग, सामाजिक–आर्थिक स्तर एवं स्कूल के प्रकार का प्रभाव पड़ता है। आत्म सम्प्रत्यय के साथ ही साथ उसकी स्वयं एवं जगत के प्रति अवधारणायें भी इसके निर्णयों में महती भूमिका अदा करती है।

2– यादव,नवीन कुमार (2019) ने माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत अनुसूचित जाति एवं सामान्य वर्ग के विद्यार्थियों के आत्म–सम्प्रत्यय का अध्ययन किया। अध्ययन के निष्कर्ष में पाया कि अनूसूचित जाति के छात्र–छात्राओं के आत्म–सम्प्रत्यय में कोई सार्थक अन्तर नहीं है व सामान्य वर्ग के छात्र–छात्राओं के आत्म–सम्प्रत्यय में भी कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

3– कौर, देवेन्द्र (2018) ने माध्यमिक स्तर के हिन्दी माध्यम तथा अंग्रेजी माध्यम विद्यार्थियों के आत्म–सम्प्रत्यय, सामाजिक अभिक्षमता तथा समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन किया। शोध के पश्चात् निष्कर्ष में पाया कि माध्यमिक स्तर के हिन्दी माध्यम तथा अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों में आत्म–सम्प्रत्यय के आधार पर अन्तर नहीं है व माध्यमिक स्तर के अंग्रेजी माध्यम विद्यार्थियों की तुलना में हिन्दी माध्यम विद्यार्थियों की सामाजिक अभिक्षमता उच्च स्तर की है।

4– नायक, प्रमोद कुमार व शर्मा, सुनीला (2017) ने शहरी ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की सांवेगिक बुद्धि तथा आत्म–सम्प्रत्यय का अध्ययन किया। निष्कर्ष में पाया कि ग्रामीण तथा शहरी विद्यार्थियों की सांवेगिक बुद्धि में सार्थक अन्तर पाया गया। ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों के आत्म सम्प्रत्यय के मध्यमान की तुलना में 0.05 विश्वास स्तर सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है।

5– मीना, मुकेश कुमार (2017) ने विद्यार्थियों की भावात्मक बुद्धि का उसके आत्म–सम्प्रत्यय, दुश्चिन्ता एवं शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन किया। निष्कर्ष में पाया कि उच्च माध्यमिक स्तर के शहरी व ग्रामीण छात्रों के आत्म सम्प्रत्यय एवं उसके घटकों सामाजिक, बौद्धिक, चारित्रिक एवं सौन्दर्यात्मक में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोधपत्र का उद्देश्य –

1. उच्च माध्यमिक स्तर के कला वर्ग के छात्र एवं छात्राओं के आत्म सम्प्रत्यय का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. उच्च माध्यमिक स्तर के विज्ञान वर्ग के छात्र एवं छात्राओं के आत्म सम्प्रत्यय का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. उच्च माध्यमिक स्तर के कला एवं विज्ञान वर्ग के छात्र–छात्राओं के आत्म सम्प्रत्यय का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोधपत्र की परिकल्पना –

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 05, May 2025

1. उच्च माध्यमिक स्तर के कला वर्ग के छात्र एवं छात्राओं के आत्म सम्प्रत्यय में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. उच्च माध्यमिक स्तर के विज्ञान वर्ग के छात्र एवं छात्राओं के आत्म सम्प्रत्यय में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. उच्च माध्यमिक स्तर के कला एवं विज्ञान वर्ग के छात्र–छात्राओं के आत्म सम्प्रत्यय में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध अध्ययन का सीमांकन – शोधकर्ता ने समय, संसाधन और भौतिक सुविधाओं को ध्यान में रखते हुये इसका सीमांकन किया गया है। शोधकर्ता ने प्रस्तुत शोध हेतु उन्नाव जनपद के उच्च माध्यमिक विद्यालयों का चयन किया है। न्यादर्श के रूप में उच्च माध्यमिक विद्यालयों के कला एवं विज्ञान वर्ग के 100 छात्र एवं 100 छात्राओं का चयन किया है।

अध्ययन विधि– प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता द्वारा विषय को भली–भांति समझकर शोध अध्ययन हेतु सर्वेक्षण विधि का चयन किया है।

सांख्यिकी प्रविधि – एकत्रित प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन तथा टी–अनुपात प्रविधियॉ प्रयुक्त की गयी है। आंकड़ो के संकलन हेतु आर0के0 सारस्वत द्वारा निर्मित आत्म सम्बोध प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है।

आंकड़ो का विश्लेषण–

परिकल्पना सं0–01 "उच्च माध्यमिक स्तर के कला वर्ग के छात्र एवं छात्राओं के आत्म सम्प्रत्यय में कोई सार्थक अन्तर नहीं है" का सत्यापन।

तालिका सं0–01

उच्च माध्यमिक स्तर के कला वर्ग के छात्र एवं छात्राओं के आत्म सम्प्रत्यय का तुलनात्मक अध्ययन करना

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी–अनुपात	
छात्र	50	181.02	20.05	1.65	स्वीकृत
छात्रायें	50	174.05	22.11		

$df = N_1+N_2-2$ $df= 98$

0.05 सार्थकता स्तर – 1.96

0.01 सार्थकता स्तर – 2.58

उपरोक्त तालिका–01 के अवलोकन से प्राप्त होता है कि उच्च माध्यमिक स्तर के कला वर्ग के छात्रों के आत्म–सम्प्रत्यय का मध्यमान 181.02 तथा मानक विचलन 20.05 है। वहीं छात्राओं का मध्यमान 174.05 व मानक विचलन 22.11 है। स्वतन्त्रता के अंश 98 पर टी–अनुपात 1.65 प्राप्त हुआ। सार्थकता स्तर 0.05 एवं 0.01 पर टी–अनुपात का मान 1.96 व 2.58 से कम है। अतः परिकल्पना "उच्च माध्यमिक स्तर के कला वर्ग के छात्र एवं छात्राओं के आत्म–सम्प्रत्यय में कोई सार्थक अन्तर नहीं है" **स्वीकृत** की जाती है।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 05, May 2025

परिकल्पना सं0–02 "उच्च माध्यमिक स्तर के विज्ञान वर्ग के छात्र एवं छात्राओं के आत्म सम्प्रत्यय में कोई सार्थक अन्तर नहीं है" का सत्यापन।

तालिका सं0–02

उच्च माध्यमिक स्तर के विज्ञान वर्ग के छात्र एवं छात्राओं के आत्म सम्प्रत्यय का तुलनात्मक अध्ययन करना

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी–अनुपात	
छात्र	50	172.23	12.57		
छात्रायें	50	170.52	22.47	0.47	स्वीकृत

$df = N_1+N_2-2$ $df= 98$

0.05 सार्थकता स्तर – 1.96

0.01 सार्थकता स्तर – 2.58

उपरोक्त तालिका–02 के अवलोकन से प्राप्त होता है कि उच्च माध्यमिक स्तर के विज्ञान वर्ग के छात्रों के आत्म–सम्प्रत्यय का मध्यमान 172.23 तथा मानक विचलन 12.57 है। वहीं छात्राओं का मध्यमान 170.52 व मानक विचलन 22.47 है। स्वतन्त्रता के अंश 98 पर टी– अनुपात 0.47 प्राप्त हुआ। सार्थकता स्तर 0.05 एवं 0.01 पर टी–अनुपात का मान 1.96 व 2.58 से कम है। अतः परिकल्पना "उच्च माध्यमिक स्तर के विज्ञान वर्ग के छात्र एवं छात्राओं के आत्म सम्प्रत्यय में कोई सार्थक अन्तर नहीं है" स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना सं0–03 "उच्च माध्यमिक स्तर के कला एवं विज्ञान वर्ग के छात्र –छात्राओं के आत्म सम्प्रत्यय में कोई सार्थक अन्तर नहीं है" का सत्यापन।

तालिका सं0–03

उच्च माध्यमिक स्तर के कला वर्ग एवं विज्ञान वर्ग के छात्र–छात्राओं के आत्म सम्प्रत्यय का तुलनात्मक अध्ययन करना

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी–अनुपात	
कला वर्ग के छात्र– छात्रायें	100	162.15	14.14	4.94	अस्वीकृत
विज्ञान वर्ग के छात्र– छात्रायें	100	172.35	15.04		

$df = N_1+N_2-2$ $df= 198$

0.05 सार्थकता स्तर – 1.96

0.01 सार्थकता स्तर – 2.58

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 05, May 2025

उपरोक्त तालिका–03 के अवलोकन से प्राप्त होता है कि उच्च माध्यमिक स्तर के कला वर्ग के छात्र–छात्राओं के आत्म सम्प्रत्यय का मध्यमान 162.15 तथा मानक विचलन 14.14 है। वहीं विज्ञान वर्ग के छात्र–छात्राओं का मध्यमान 172.35 व मानक विचलन 15.04 है। स्वतन्त्रता के अंश 198 पर टी–मूल्य 4. 94 प्राप्त हुआ। सार्थकता स्तर 0.05 एवं 0.01 पर टी का मान 1.96 व 2.58 से अधिक है। अतः परिकल्पना "उच्च माध्यमिक स्तर के कला एवं विज्ञान वर्ग के छात्र–छात्राओं के आत्म–सम्प्रत्यय में कोई सार्थक अन्तर नहीं है" **अस्वीकृत** की जाती है।

निष्कर्ष –

1. उच्च माध्यमिक स्तर के कला वर्ग के छात्र एवं छात्राओं के आत्म सम्प्रत्यय में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
2. उच्च माध्यमिक स्तर के विज्ञान वर्ग के छात्र एवं छात्राओं के आत्म सम्प्रत्यय में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
3. उच्च माध्यमिक स्तर के कला एवं विज्ञान वर्ग के छात्र–छात्राओं के आत्म–सम्प्रत्यय में सार्थक अन्तर है।

परिणाम– उच्च माध्यमिक स्तर के कला एवं विज्ञान वर्ग के छात्र–छात्राओं के आत्म–सम्प्रत्यय के अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि जो शैक्षिक वातावरण विज्ञान वर्ग के छात्र–छात्राओं को मिलता है वह कला वर्ग के छात्र–छात्राओं को उतना प्राप्त नहीं हुआ है। इसलिये उनके आत्म–सम्प्रत्यय में अन्तर देखने को मिलता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. सक्सेना, अर्चना (2016). माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत अनुसूचित जाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों का आत्म सम्प्रत्यय, आकांक्षा स्तर एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन, लघु शोध प्रबन्ध, महात्मा ज्योतिबा फूले रोहिलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली।
2. मीना, मुकेश कुमार (2017). विद्यार्थियों की भावात्मक बुद्धि का उसके आत्म सम्प्रत्यय, दुश्चिन्ता एवं शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन, लघु शोध प्रबन्ध, राजस्थान विश्वविद्यालय।
3. कौर, देवेन्द्र (2018). माध्यमिक स्तर के हिन्दी माध्यम एवं अंग्रेजी माध्यम विद्यार्थियों के आत्म सम्प्रत्यय, सामाजिक अभिक्षमता तथा समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन. इंटरनेशनल एजूकेशन जनरल, चेतना मैप्छ 2455–8729।
4. यादव, नवीन कुमार (2019). माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत अनुसूचित जाति एवं सामान्य वर्ग के विद्यार्थियों के आत्म सम्प्रत्यय का अध्ययन, इंटरनेशनल एजूकेशन एवं रिसर्च जर्नल. वाल्यूम–मैप्छ 2454–9916।
5. अनवर, तमन्ना एवं डॉ0 जेबा (2023). सामाजिक–आर्थिक स्तर, स्कूल व लिंग के संदर्भ में किशोरों के आत्म सम्प्रत्यय एवं अवधारणा प्राप्ति का अध्ययन, आर्यावर्त शोध विकास पत्रिका, पृष्ठ नं0– 172 – 176।
6- Website : www.education.nic.
7. **श्रीवास्तव, डी.एन.** (2018). **अनुसंधान विधियाँ, आगरा : साहित्य प्रकाशन**